छत्तीसगढ़ में राम वनगमन पथ निर्माण का परिचयात्मक अध्ययन

राम किंकर पाण्डेय

मर्यादा पुरुषोत्तम राम भारतीय जनमानस के लिए केवल एक नाम, चरित्र या पात्र नहीं हैं, बल्कि जन-जन के जीवन-मूल्यों के आधार हैं। यह भारत भूमि उनके नाम से ही अर्थवान और प्राणवान होती है। उनके चरित्र में भारत का कोटि-कोटि जनजीवन अपने को सार्थक पाता है। भारत का कोटि-कोटि जन उनकी आँखों से जग-जीवन को देखता है। उनके चरित्र का अवगाहन कर भारतीय जनमानस जीवन के संदर्भों, परिप्रेक्ष्यों, स्थितियों, परिस्थितियों, घटनाओं, प्रतिघटनाओं का विवेचन विश्लेषण करता है। वास्तव में राम भारत की आत्मा हैं, राम भारत के पर्याय हैं। जिस प्रकार आत्मा को शरीर से और शरीर को आत्मा से कोई पृथक नहीं कर सकता है, उसी प्रकार राम को भारत के जनमानस से कोई अलग नहीं कर सकता। संपूर्ण भारत भूमि में राम के जीवन-संघर्ष से जुड़े स्थल हैं, जिनके दर्शन मात्र से भारत का जन सुख का आश्रय पाता है, उनके दुख में भारत का कोटि-कोटि जन आँसुओं के सागर में डूबने लगता है। साथ ही उस निर्मल अश्रु धारा में डूबोकर स्वयं को परम पुनीत मानने लगता है।

इतिहासकारों का यह मानना है कि जहाँ-जहाँ श्री राम गये, वहाँ-वहाँ उनकी यात्राओं की स्मृति बनाये रखने के लिए मंदिर बनाये गए। इतिहासकार नंदिता कृष्णन इन स्थानों के सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित करते हुए कहती हैं–"जिन स्थानों पर भी श्री राम गये, वहाँ अभी भी उनकी स्मृति वैसी ही बनी हुई है, मानों वह कल ही आये हों। भारत में समय को सापेक्ष माना जाता है, इसलिए कुछ स्थानों पर तो उनकी स्मृति में मंदिर बन गये और बाकी स्थानों पर वे यात्राएँ और श्री राम की स्मृति लोक परंपरा का अभिन्न अंग बन गयीं।" ठीक इसी तरह की बात स्टीफन नैप ने भी कही है, जो भारतीय वैदिक परंपरा के गहन अध्येता हैं, वे लिखते हैं–" श्री राम की स्मृति आज भी उतनी मजबूती से कायम है, क्योंकि उनका जीवन और शासनकाल दोनों ही असाधारण था। उनके शासनकाल में शांति थी, प्रचुर समृद्धि भी, इसीलिए रामराज्य को आज के सुशासन का संदर्भ बिंदु माना जाता है।"

रघुकुल शिरोमणि श्री राम की जन्मभूमि भले ही अयोध्या है, लेकिन छत्तीसगढ़ उनकी कर्मभूमि रही है। चौदह वर्ष के कठिन वनवास काल के दौरान अयोध्या से प्रयागराज, चित्रकूट, सतना गमन करते हुए प्रभु श्री राम ने दक्षिण कौशल अर्थात् छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले के भरतपुर पहुँचकर मवई नदी पारकर दण्डकारण्य में प्रवेश किया।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का ननिहाल चंदखुरी छत्तीसगढ़ में है। राम छत्तीसगढ़ियों की जीवन-शैली और दिनचर्या का अभिन्न अंग हैं। छत्तीसगढ़ की अस्मिता की प्रतीक माता कौशल्या के पुत्र प्रभु श्री राम छत्तीसगढ़ियों के लिए उनके भांजे हैं। इस रूप में उनका छत्तीसगढ़ वालों से गहरा नाता है। इसका जीता-जागता उदाहरण है, छत्तीसगढ़ में सभी जाति-समुदाय के लोग अपनी बहन के पुत्र को भगवान के प्रतिरूप अर्थात् भांजा मानकर उनका चरण पखारते हैं। छत्तीसगढ़ी जनमानस में मामा-भांजे के बीच के रिश्ते को

पूरी आत्मीयता के साथ निभाया जाता है। मामा और भांजे का यह रिश्ता कई अवसरों पर अत्यधिक सघन और घनिष्ठ रूप में दिखायी पड़ता है। त्रेता युग में जब छत्तीसगढ़ का प्राचीन नाम कोसल और दण्डकारण्य था, तब कौशल नरेश भानुमंत थे। वाल्मीकि रामायण के अनुसार अयोध्या के युवराज दशरथ के राज्याभिषेक के अवसर पर कौशल नरेश भानुमंत को भी अयोध्या आमंत्रित किया गया था, इस अवसर पर कौशल नरेश भानुमंत के साथ उनकी पुत्री एवं राजकन्या भानुमती भी अयोध्या गयी हुई थीं। अयोध्या के युवराज दशरथ कौशल की राजकन्या भानुमती के सुंदर और सौम्य स्वरूप को देखकर मोहित हो गये और कौशल नरेश महाराज भानुमंत से विवाह का प्रस्ताव रखा। युवराज दशरथ एवं राजकन्या भानुमती का विवाह धूम-धाम से संपन्न हुआ। विवाह पश्चात् कौशल क्षेत्र की राजकुमारी होने के कारण भानुमती को कौशल्या कहा जाने लगा। कौशल राजकुमारी और अयोध्या महारानी कौशल्या की कोख से मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जन्म हुआ। छत्तीसगढ़ी जनमानस कौशल्या को अपनी बहन के रूप में मानता है और अपनी बहन के पुत्र श्री राम को भांजा मानकर उनकी पूजा करता है।"

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से 27 किलोमीटर दूर आरंग विकासखंड के ग्राम चन्दखुरी में आठवीं-नौवीं शताब्दी में निर्मित माता कौशल्या का मंदिर स्थित है। वाल्मीकि कृत 'रामायण' के बालकांड के सर्ग 13 श्लोक 26 में इस चन्दखुरी गाँव का भी जिक्र आता है। यह माना जाता है कि चन्दखुरी सैकड़ों वर्ष पूर्व चन्द्रपुरी अर्थात् देवताओं की नगरी के नाम से विख्यात थी। कालांतर में इस नाम का अपभ्रंश हुआ और चन्दखुरी हो गया। वर्तमान चन्दखुरी में माता कौशल्या का मंदिर देश और दुनिया में उनके नाम का इकलौता मंदिर है। वास्तव में यह छत्तीसगढ़ की गौरवपूर्ण अस्मिता का प्रतीक स्वरूप है। अद्भुत प्राकृतिक सुषमा के बीच स्थित इस मंदिर के गर्भ-गृह में माता कौशल्या की गोद में बाल रूप में प्रभु श्री राम की वात्सल्य प्रतिमा उनके भक्तों और श्रद्धालुओं के मन को सहज रूप में ही अपनी और आकर्षित कर लेती है।

दक्षिण कौशल के नाम से विख्यात छत्तीसगढ़ का अधिकांश भाग रामायण काल में दण्डकारण्य क्षेत्र के अंतर्गत आता था। यह क्षेत्र उन दिनों दक्षिणापथ के नाम से भी माना जाता था। दण्डकारण्य क्षेत्र में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने अपने वनवास काल का सर्वाधिक समय बिताया था। विभिन्न शोधों से लगभग यह प्रमाणित हो चुका है कि अपने वनवास काल में 14 वर्षो में से लगभग 10 वर्ष से अधिक का समय श्री राम ने छत्तीसगढ़ की पावन धरा में बिताया था। यह माना जाता है कि भगवान राम ने उत्तर भारत से छत्तीसगढ़ में प्रवेश करने और यहाँ से विभिन्न स्थानों पर चौमासा व्यतीत करने के बाद दक्षिण भारत में प्रवेश किया था। छत्तीसगढ़ की संस्कृति, लोकगीत, आचार-विचार और व्यवहार में राम की उपस्थिति सर्वत्र देखी जा सकती है। प्रभु श्री राम की स्मृति और वनवास काल में छत्तीसगढ़ में व्यतीत किये गए उनके समय की धरोहर को सहेजने के लिए छत्तीसगढ़ में श्री राम वन गमन पथ को नवीन स्वरूप प्रदान किया जा रहा है। श्री राम के यात्रा पथ को एवं जहाँ-जहाँ भगवान श्री राम, माता जानकी और लक्ष्मण जी ने विश्राम किया था, उसका ऐतिहासिक कायाकल्प किया जा रहा है।

ऐतिहासिक स्रोतों और विभिन्न अनुसंधानों के अनुसार प्रभु श्री राम ने छत्तीसगढ़ में वन गमन के दौरान लगभग 75 स्थलों का भ्रमण किया, जिसमें से 51 स्थल ऐसे हैं, जहाँ श्री राम ने वनवास के दौरान रूककर कुछ समय बिताया था। इनमें से नौ महत्वपूर्ण ऐसे स्थल हैं, जिनका अलग महत्व है। छत्तीसगढ़ सरकार ने प्रारंभिक चरण में इन्हीं नौ स्थलों को जोड़कर श्री राम वन गमन पथ को विकसित करने की योजना बनायी है। ये स्थल इस प्रकार से हैं–सीतामढ़ी-हरचौका (कोरिया), रामगढ़ (अंबिकापुर), शिवरीनारायण (जांजगीर-चंपा), तुरतुरिया (बलौदाबाजार), चंदखुरी (रायपुर), राजिम (गरियाबंद), सिहावा-सप्तऋषि आश्रम (धमतरी), जगदलपुर (बस्तर) और रामाराम (सुकमा)।

छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले में स्थित सीतामढ़ी-हरचौका से ही श्रीराम का छत्तीसगढ़ में प्रवेश माना जाता है। छत्तीसगढ़ में राम के वनवास का पहला पड़ाव यहीं माना जाता है। यह स्थान नदी के किनारे स्थित है, जहाँ गुफाओं में 17 कक्ष हैं। इस स्थान को सीता रसोई के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ माता सीता ने रसोई का निर्माण किया था। कोरिया जिले से आगे सरगुजा जिले में रामगढ़ की पहाड़ी है, जहाँ तीन कक्षों वाली बेंगरा की गुफा है। यहाँ माता सीता ने विश्राम किया था। यहीं पर देश की सबसे पुरानी नाट्यशाला भी स्थित है। महाकवि कालिदास ने 'मेघदूतम' की रचना यहीं की थी। सरगुजा की रामगढ़ पहाड़ी में श्री राम ने अपने वनवास का महत्वपूर्ण समय बिताया था। इसकी झलक हमें यहाँ के लोक में सहज और स्वाभाविक रूप से दिखायी दे जाती है। सरगुजा अंचल में पारंपरिक त्यौहारों और लोक नृत्यों में राम कथा के कई प्रसंग मौजूद रहते हैं। यहाँ राम कथा को श्रवण-कीर्तन द्वारा लोक शिक्षा और लोक संस्कार का कार्य भी संपन्न किया जाता है। सरगुजा अंचल में राम की उपस्थिति यहाँ के जनमानस में दिखती है। यहाँ की लोक स्मृतियों, लोक कंठों में राम रचे-बसे हैं।

छत्तीसगढ़ में राम वन गमन का एक महत्वपूर्ण स्थल शिवरीनारायण है, जो जांजगीर-चंपा जिले में स्थित है। यह वही स्थान है, जहाँ रूककर भगवान राम ने शबरी के जूठे बेर खाये थे। यह स्थान छत्तीसगढ़ के जोंक, महानदी और शिवनाथ नदी का संगम स्थल भी है। यहाँ नर-नारायण और शबरी का मंदिर भी है। राम कथा में शबरी-प्रसंग एक महत्वपूर्ण घटना है, जो कि सनातन संस्कृति के समरस स्वभाव की व्याख्या करती है। वाल्मीकि रामायण में भी इसका विस्तार से उल्लेख मिलता है। जब राम और लक्ष्मण शबरी के आश्रम पहुँचते हैं तो ऐसा लगता है कि जैसे वह वर्षों से उनकी प्रतीक्षा कर रही हो। वाल्मीकि रामायण के वर्णन अनुसार मतंग ऋषि शबरी से कह गये थे कि रघुवंश के राम तुम्हारे पास आएँगे उनसे मिलकर ही तुम देह त्यागना। शबरी, शबर जाति की बतायी गयी है, जो मतंग ऋषि की सेवा करती थी और अपने तपोबल से सिद्ध और तपस्विनी के रूप में जानी जाती थी। इसीलिए उसे श्रमणी, सिद्धा और तपस्विनी भी कहा गया है। सीता की खोज में निकले राम और लक्ष्मण जब शबरी से मिलते हैं, तो वह भाव विभोर हो जाती है। उन्हें अपनी कुटिया में आते देखकर उठकर उनके पैर पकड़ लेती है। प्रभु श्री राम इस सिद्धा तपस्विनी शबरी से पूछते हैं कि आपकी तपस्या में कोई विघ्न तो नहीं है–

"तौ पुष्करिष्याः पम्पायास्तीरमासाद्य पश्चिमम्।

अपश्यतां ततास्तत्र शबर्या रम्यमाश्रमम।।

तौ तु द्रष्टा ततः सिद्धा समुत्पाय कृतांजलिः।

पादौ जग्राह रामस्य लक्ष्मणस्य च धीमतः।

समुवाच ततो रामः श्रमणी संशितव्रताम्।।

कच्चिते निर्जिता विघ्नाः कच्चित्ते वर्धते तपः।।"

(सुंदरकाण्ड, 70, 6–7 (रामायण 1992 पृ. 387)

राम का प्रश्न सुनकर शबरी उत्तर देते हुए कहती है कि मैं आपकी ही प्रतीक्षा कर रही हूँ। मैंने आपके लिए इस पम्पा सरोवर के किनारे उगने वाली वन की अनेक वस्तुएँ एकत्रित करके रखी हुई है।

"मया तु विविधं वन्यं संचितं पुरुषर्षभ।

तवार्थे पुरुषव्याघ्र पम्पायास्तीरसम्भवम्।।"

शबरी और राम के प्रसंग पर टिप्पणी करते हुए आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी लिखते हैं–" वाल्मीकि रामायण में शबरी का जो चरित्र है, उसमें ज्ञान, कर्म, भक्ति समन्वय है, उसे सिद्धा और श्रमणी कहा गया है। शबरी ज्ञान-विज्ञान से संपन्न है, वन की रक्षा करती है, मतंग मुनि के प्रति श्रद्धा भक्ति का भाव उसके मन में है-इस तरह वह ज्ञानी, कर्मनिष्ठ और भक्त तीनों एक साथ है।"

जांजगीर चंपा जिले में स्थित शिवरीनारायण स्थल से इसीलिए छत्तीसगढ़ के जनमानस का भावनात्मक लगाव है। शबरी की भक्ति, भक्ति साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखती है। शबरी द्वारा राम को जूठे बेर खिलाये जाने का लोक प्रसंग आंतरिक और सघन प्रेम की अभिव्यक्ति का अनुपम उदाहरण है। तुलसी कृत 'रामचरितमानस' में भी इस प्रसंग का वर्णन भाव विह्वल कर देने वाला है। जब शबरी को यह पता चलता है कि प्रभु श्री राम स्वयं उसके आश्रम तक चलकर आये हैं तो वह एकदम भाव विभोर हो उठती है और ऋषि मतंग के दिये आशीर्वाद को स्मरण कर गद्गद् हो जाती है। वह दौड़कर प्रभु श्री राम के चरणों से लिपट गयी। इस भावनात्मक दृश्य को गोस्वामी तुलसीदास जी 'रामचरितमानस' में इस प्रकार उल्लखित करते हैं–

"सरसिज लोचन बाहु बिसाला।

जटा मुकुट सिर उर बनमाला।।

श्याम गौर सुंदर दोउ भाई।

शबरी परी चरन लपटाई।।

प्रेम मगर मुख वचन न आवा।

पुनि-पुनि पद सरोज सिर नावा।।

सादर जल लै चरन पखारे।

पुनि सुंदर आसन बैठारे।।"

शबरी द्वारा श्रद्धापूर्वक भेंट किये गए बेर फल का श्री राम ने बड़े प्रेम से रसास्वादन किया और उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। तुलसी ने इसका वर्णन भी किया है–

"कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि।

प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि। "

शबरी के इन कंद मूल फलों की मिठास वास्तव में भक्ति की वह मिठास है जिसके आगे सारे बंधन फीके हैं। यह प्रसंग शबर जाति की शबरी को हमारी सामाजिकता और समरसता की मूलधारा में जोड़ने के साथ-साथ उसे एक परिवार का स्वरूप भी देता है। राम इस प्रसंग के माध्यम से तमाम सामाजिक संकीर्णताओं को तोड़ते हुए समरस मानव समाज की पुनर्रचना की नींव रखते हैं। शायद यही वजह है कि छत्तीसगढ़िया जन-मन अपने भांजे राम को अत्याधिक आदर और सम्मान प्रदान करता है।

जैसा कि ऊपर के प्रसंग में कहा गया कि शबरी राम की भक्ति में लीन है, वह राम से मिलते ही कहती है कि मैं किस प्रकार से आपकी स्तुति करूँ–"अधम जाति मैं जड़मति नारी अधम ते अधम, अधम अति नारी, तिन्हें यहँ मैं मतिमंद अधारी।" शबरी की बातें सुनकर राम उसे संदेश देते हैं कि जाति-पाँति, कुल धन परिवार इन सबके होने से मनुष्य बड़ा नहीं होता, भक्ति का नाता ही सबसे बड़ा नाता है। यहाँ तुलसीदास के वर्णन में जाति-पाँति का बंधन शिथिल होता प्रतीत होता है और भक्ति की श्रेष्ठता ही दिखायी देती है–

"कह रघपति सुनु मामिनि बाता।

मानहुँ एक भगति कर नाता।।

जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई।

धन, बल परिजन गुन चतुराई।।

भगति हीन सोहई कैसा।

बिन जल बारिद देखिअ जैसा।।"

इसके बाद प्रभु श्री राम शबरी को नवधा भक्ति का संदेश देते हैं। अध्यात्म रामायण में इस नवधा भक्ति का गूढ़ वर्णन है, जहाँ उसका निरूपण दार्शनिक तत्वों के साथ किया है, लेकिन तुलसी के 'रामचरितमानस' की नवधा भक्ति का संदेश सरलतम और सहजतम रूप में है, जिसे श्री राम ने शबरी को सुनाया था–

“नवधा भगति कहऊँ तोहि पाहीं।

सावधान सुनु धरू मन माहीं।।

प्रथम भगति संतन्ह कर संगा।

दूसरि रति मम कथा प्रसंगा।।

गुरु पद पंकज सेवा, तीसरि भगति अमान।

चौथी भगति मम गुन मन, करई कपटि तजि गान।।

मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा।

पंचम भजन सो बेद प्रकासा।

छठ दम सील बिरति बहु करमा।

निरत निरंतर सज्जन धरमा।।

सातवें सम मोहि मय जग देखा।

मोते संत अधिक करि लेखा।।

आठवँ जथालाभ संतोषा।

सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा।।

नवम सरल सब सन छलहीना।

मम भरोस हियँ हरषन दीना।।

नव महुँ एकऊँ जिन्हे कें होई।

नारि पुरुष सचराचर कोई।।”

नवधा भक्ति का यह उपदेश भक्त और प्रभु के संबंध का अनुपम संदेश है। शबरी को नवधा भक्ति का संदेश देने के पश्चात् श्री राम उससे सीता के संबंध में पूछते हैं और शबरी उन्हें सुग्रीव से मित्रता की सलाह देती है। रामचरितमानस में यह प्रसंग अधिक स्पष्ट रूप में चित्रित हुआ है, शबरी कहती है–

“पंपा सरहि जाहु रघुराई। जहँ होइहि सुग्रीव मिताई।” इस तरह राम को सारी जानकारी देकर शबरी राम का मुख निहारती हुई उनके चरण कमल हृदय में धारे हुए योगाग्नि से देह त्याग देती है–

“कहि कथा सकल बिलोकि, हरि मुख हदय पद पंकज धरे।

तजि जोग पावक देह हरि पद लीन जहँ नहिं फिरे।।”

शिवरी नारायण के पश्चात् बलौदा बाजार जिले में स्थित तुरतुरिया नामक स्थान रामकथा से जुड़ा महत्वपूर्ण स्थल है। इसे लव-कुश की जन्म स्थली माना जाता है। लव कुश की शिक्षा-दीक्षा भी तुरतुरिया में वाल्मीकि आश्रम में हुई मानी जाती है। इस स्थान पर प्रतिवर्ष पौष माह की पूर्णिमा को भव्य मेले का आयोजन होता है। जहाँ तुरतुर-तुरतुर की आवाज के साथ निरंतर जल प्रवाहित होता रहता है इसीलिए इस स्थान का नाम तुरतुरिया पड़ा। यहाँ एक छोटी-सी नदी बहती है, जिसका नाम बालमदेह है। स्थानीय जनमानस इसका बाल-वैदेही से संबंध स्थापित करते हैं, जो सीता के उपनाम से संबंधित है। इस नदी के उत्तर की ओर ऐतिहासिक, पुरातात्विक सामग्री से बनी प्राचीन पाषाण प्रतिमाएँ वैष्णव, शैव, बौद्ध की हैं। लव-कुश की जन्मस्थली होने की मान्यता के पीछे यहाँ से प्राप्त दो प्रतिमाएँ है। पहला एक खड्गधारी की कोहनी को अश्व ने अपने मुँह से दबा रखा है। दूसरी प्रतिमा एक व्यक्ति वृषभ के साथ युद्धरत है। इन्हीं प्रतिमाओं से अनुमान लगाया जा सकता है कि यह स्थल राम कथा के लव-कुश प्रसंग से जुड़ा हुआ है। राजा राम के बाद उत्तर कोसल का राज्य लव को और दक्षिण कोसल का राज्य कुश को मिला था।

गरियाबंद जिले में स्थित 'राजिम' नामक स्थान को छत्तीसगढ़ का प्रयाग कहा जाता है, यह सोंढुर पैरी और महानदी के संगम पर स्थित है। यह माना जाता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने यहाँ कुल देवता कुलेश्वर महादेव की पूजा की थी। राजिम छत्तीसगढ़वासियों के लिए एक पवित्र स्थान है। धमतरी जिले में स्थित सिहावा में सप्त ऋषियों के आश्रम विभिन्न पहाड़ियों में बने हुए हैं। उनमें मुचकुंद आश्रम, अगस्त्य आश्रम, अंगिरा आश्रम, श्रृंग ऋषि आश्रम आदि ऋषियों के आश्रम में जाकर श्रीराम ने उनसे भेंट की और वनवास काल में ठहरकर यहाँ कुछ समय व्यतीत किया। सिहावा महानदी का उद्गम स्थल है। राम कथाओं में यह वर्णन मिलता है कि भगवान राम इस स्थान में काफी समय तक निवासरत थे। यहाँ निवासरत रहते हुए श्री राम साधु-संन्यासियों एवं मनीषियों से सत्संग करते रहे। सीतानदी सिहावा के दक्षिण दिशा में प्रवाहित होती है, जिसके पार्श्व में सीतानदी अभयारण्य बना हुआ है। सिहावा से आगे राम का वनमार्ग कंक ऋषि के आश्रम की ओर से कांकेर पहुँचता है। कांकेर में जोगी गुफा, कंक ऋषि का आश्रम एवं रामनाथ महादेव मंदिर के दर्शन कर दूध नदी के मार्ग से केशकाल पर्वत की तराई से होकर श्री राम बस्तर क्षेत्र में प्रवेश करते हैं।

बस्तर क्षेत्र में रामवन गमन मार्ग में नारायणपुर एक महत्वपूर्ण स्थल है। नारायणपुर में अपने नाम के अनुरूप विष्णु का प्राचीन मंदिर है। नारायणपुर के पास राकसहाड़ा स्थान है। कहा जाता है कि वनवास काल के दौरान श्रीराम एवं लक्ष्मण जी ने ऋषियों की तपोभूमि में विघ्न पहुँचाने वाले राक्षसों का भारी संख्या में विनाश किया था। उनकी हड्डियों के ढेर से पहाड़ बना दिया था। यह स्थान आज भी राकसहाड़ा के नाम से विख्यात है। वहाँ से आगे चलकर श्रीराम आज के बारसूर पहुँचे। बारसूर बाणासुर की राजधानी कही जाती है। आज भी यह एक सांस्कृतिक एवं धार्मिक केन्द्र है। बारसूर से प्रभु श्रीराम चित्रकोट पहुँचे। चित्रकोट जलप्रपात, जो इन्द्रावती नदी पर बना हुआ है, राम वनगमन के समय राम-सीता की यह रमणीय स्थली रहा है। यहाँ राम और सीता ने कुछ समय व्यतीत किया था यह राम-सीता की लीला स्थली भी कही जाती है। यहाँ सीता और रामचन्द्र जी के नाम पर एक गुफा भी है। कहा जाता है कि भगवान राम

से चित्रकोट में हिमगिरी पर्वत से भगवान शिव एवं पार्वती जी मिलने के लिए आये थे। आज के बस्तर संभाग का दूरस्थ क्षेत्र सुकमा जिला है। यहाँ का रामा राम स्थल भी राम वनगमन मार्ग में होने के कारण पवित्र स्थान माना जाता है। आज भी यहाँ रामनवमी के समय का मेला पूरे क्षेत्र में प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि राम वन गमन के समय श्रीराम ने भू देवी (धरती देवी) की पूजा की थी। यहाँ की पहाड़ी में राम के चरण-चिन्ह मिलने की किंवदंती है।

छत्तीसगढ़ की वर्तमान सरकार ने इन चिन्हित नौ क्षेत्रों को जोड़कर राम वन गमन पथ के निर्माण की योजना तैयार की है, जो महत्वपूर्ण है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र में राम से जुड़े इन स्थलों से यहाँ के निवासियों का भावनात्मक लगाव भी है। छत्तीसगढ़िया जनमानस यह शिद्दत से स्वीकार करता है कि छत्तीसगढ़ की पावन धरा पर वनवास काल में सीता जी लक्ष्मण जी के साथ मर्यादा पुरुषोत्तम रामचंद्र जी का आगमन हुआ था। उनके चरण स्पर्श से छत्तीसगढ़ की भूमि पवित्र और कोटि-कोटि धन्य हो गयी। छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान डॉ. बिहारीलाल साहू लिखते हैं–"भगवान श्रीराम का छत्तीसगढ़ की धरती से नाभि नाल संबंध है। उनकी जननी कौशल्या यहीं जन्मी थी और सीता जी के पुत्रों अर्थात् उनके पौत्रों का जन्म तुरतुरिया के वाल्मीकि आश्रम में हुआ था। 'मानव सभ्यता की जन्म स्थली के रूप में छत्तीसगढ़ के लोक साहित्य में रामचरित का पुष्कल प्रकाशन हुआ है। यहाँ के जनमानस में रामत्व की गहरी पैठ है। जनभाषा छत्तीसगढ़ी के लोकगीतों, गाथाओं, लोकोक्तियों और जनकथाओं में राम का श्रद्धापूर्ण अवतरण परिलक्षित है। लोकमानस उन्हें अलौकिकता के धरातल पर आत्मसात करता है। फलतः राम उनके सहचर बन जाते हैं। उनके जैसा साथ जीते हैं और उन्हें जगाते हैं। छत्तीसगढ़ में राम वनगमन परिपथ का अस्तित्व इस अंचल में उनकी अंतरंगता को प्रत्यक्षीकृत करता है।"

राम किंकर पाण्डेय,

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी विभाग), शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

चिरमिरी, कोरिया (छ.ग.)